Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

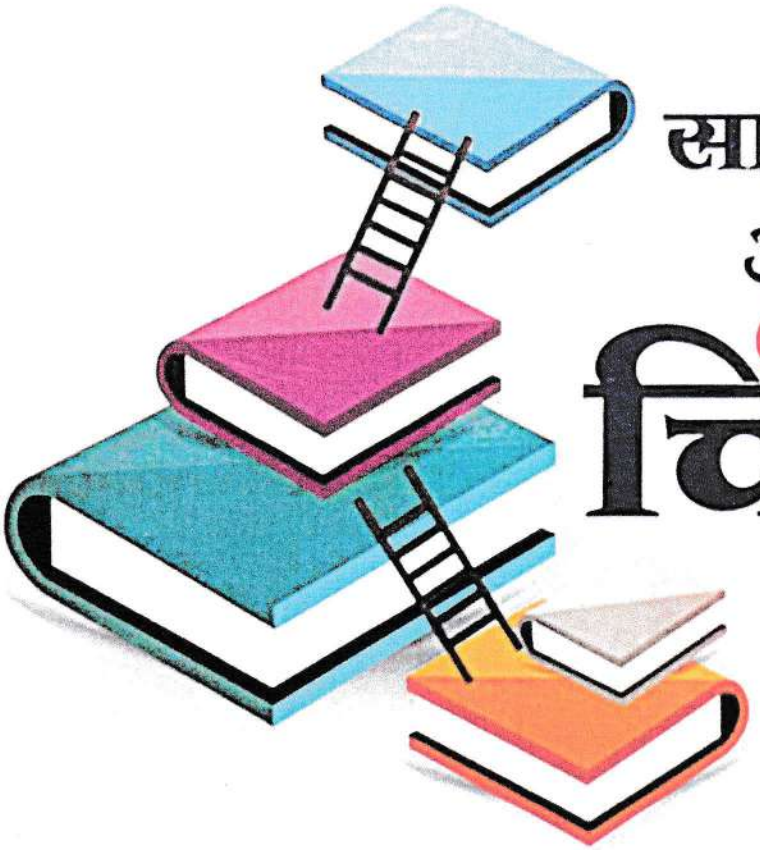

साहित्य और समाज चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

Lt. Dr. R. C. Patil

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Publication

January 2020
Special Issue-01

01

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

श्री विद्या विकास मंडल संचलित

श्री संत दामाजी महाविद्यालय, मंगलवेढा

(हिंदी विभाग)

एवं पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होलकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

के संयुक्त तत्त्वावधान में

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी

"साहित्य, समाज और संस्कृति"

खंड १ - साहित्य और समाज चिंतन

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

https://www.ugc.ac.in/pdfnews/4033931_UGC-Regulation_min_Qualification_Jul2018.pdf

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc..)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals	08 per paper	10 per paper
2.	Publications (other than Research papers)		
	(a) Books authored which are published by :		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course
	(c) MOOCs		
	Development of complete MOOCs in 4 quadrants (4 credit course)(In case of MOOCs of lesser credits 05 marks/credit)	20	20
	MOOCs (developed in 4 quadrant) per module/lecture	05	05
	Content writer/subject matter expert for each module of MOOCs (at least one quadrant)	02	02
	Course Coordinator for MOOCs (4 credit course)(In case of MOOCs of lesser credits 02 marks/credit)	08	08
	(d) E-Content		
	Development of e-Content in 4 quadrants for a complete course/e-book	12	12
	e-Content (developed in 4 quadrants) per module	05	05
	Contribution to development of e-content module in complete course/paper/e-book (at least one quadrant)	02	02
	Editor of e-content for complete course/ paper /e-book	10	10
4	(a) Research guidance		

12) हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त किन्नरों की वेदना
मीनाक्षी. बी. पाटील, विजयपुर ||53

13) प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त दलित विमर्श
प्रा. इम्रान शेख, वाशी ||56

14) इक्कीसवीं शती के 'मिस यमिया' उपन्यास में दलित स्त्री विमर्श
प्रा.डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड, सोलापुर ||59

15) नीरजा माधव की साहित्य में चित्रित सामाजिक विषमता
प्रा. समाधान नागणे, सांगली ||62

16) दलित साहित्य की प्रेरणा और ऊर्जा डॉ. अम्बेडकर
प्रा. डॉ. सचिन रमेशराव चोले, लातूर ||63

17) मृणाल पाण्डे – एक सशक्त महिला नाटककार
प्रा. डॉ. प्राजक्ता प्रकाश जोशी, सोलापुर ||67

18) नीरजा माधव की कहानियाँ : बुजुर्ग विमर्श
श्री विकास मगर, पुणे (सासवड) ||69

19) दलित साहित्य : एक विवेचन
प्रा.डॉ. ज्योती गायकवाड, सोलापुर ||71

20) रज्जन त्रिवेदी की कहानियों में नारी समस्या
डॉ. अर्चना शिवाजीराव कांबळे, सोलापुर (बार्शी) ||73

21) डॉ. दामोदर खडसे के कथा साहित्य में समाज
प्रा. शिवशंकर सोमण्णा ईश्वरकट्टी, पुणे ||75

22) कहानी साहित्य में अभिव्यक्त समाज
प्रा. डुरे सुरज विठ्ठल, सांगली ||78

23) राहुल सांकृत्यायन के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त समाज
लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील, कोल्हापुर ||79

www.vidyawarta.com/03 | http://www.primingarea.blogspot.com

23

राहुल सांकृत्यायन के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त समाज

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
राजर्षी छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापूर (महाराष्ट्र)

समाज की परिधि बड़ी विस्तृत एवं व्यापक है। मानव जीवन के सभी पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी समाज के अंतर्गत ही आते है और इनकी पूर्ती समाज में रहकर ही की जा सकती है। हिंदू समाज अनेक विदेशी आक्रमणों को झेलता हुआ भी अपने अस्तित्व को बना रखने में सफल रहा परंतु अपनी कुरुपताओं और विकृतियों को त्याग न सका। रुढ़ि परंपरा, रीति–रिवाज तथा धर्म के नाम पर अनेक बुराइयाँ समाज में घर कर गई थी। शताब्दियों से समाज में नारी उपेक्षित रही। मनु की दुहाई देकर पिता तथा पुत्र के संरक्षण में वह पुरुष के लिए मात्र उपभोग की बस्तु बनी रही। वर्ण व्यवस्था के अनुसार समाज का एक वर्ग अछूत समजा जाता था। खान–पान, विवाह आदि के नियम कठोर थे।

सामाजिक विषमता:–

राहुल सांकृत्यायन ने अपने कथा साहित्य में समाज में स्थित विषमता का चित्रण किया है। वे समाज में फैले वैषम्य को अज्ञान का दूसरा नाम मानते हैं। वे ईश्वर में विश्वास नहीं रखते क्योंकि वे जानते हैं कि उसी के नाम के आड़ में सारे अनर्थ होते हैं। सारी अनीतियाँ पलती हैं, व्यचिचार होते हैं । जिस प्रकृति के रहस्य जानने में मनुष्य अपने को असमर्थ समझता है, उसी के लिए वह ईश्वर का ध्यान करता है। वास्तव में यही खयाल अंधकार की उपज है। समाज में वर्ग–वैषम्य, शोषक–शोषित, अमीर–गरीब के अस्तित्व को वैद्य घोषित करने के लिए 'ईश्वर' का नाम लिया जाता है धर्म की भोलाभाड़ी को चलाने और उससे न्याय सम्मत साबित करने के लिए ईश्वर का ख्याल बहुत सहायक है। उनका मानना है गोकर्णी और रामलीला, ताजिया और बाजा ये सारे झगड़े धनिकों के बड़े काम के हैं। वे उन्हीं को लेकर गरीबों में झगड़े पैदा करते हैं। इनको एक–दूसरे का जानी दुश्मन बनाते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं। एक ओर लोग अछूतों से घृणा करते हैं, उनके प्रति हमारा व्यवहार पशुओं से भी बदतर है, दूसरी ओर ईश्वर और धर्म की दुहाई भी देते हैं।

इसके साथ ही धर्म प्रसार के नाम पर समाज में फैले वैषम्य को निशाना बनाते हुए लिखा है, ''धार्मिक तटस्थता क्या खाक-पत्थर है। हिंदुस्तान में कितने ईसाई हैं, जो कि हिंदुस्तानी खजाने का लाखों रुपा ईसाई गिर्जो और उनके पादरियों के ऊपर खर्च किया जा रहा है। निष्पक्षता तब होती जबकि हिंदू मुसलमान तथा दूसरे धर्मावलम्बियों को उसी प्रकार की सहायता दी जाती है।''[1] यहाँ लेखक ने सर्व धर्म समभाव की कल्पना को हमारे सामने प्रस्तुत करते हुए धर्म के नाम पर चंद ठेकेदार और उच्चवर्गीय लोग वाह्याडंबरों का सहारा लेकर अपने काले धन का सदुउपयोग दिखाते हैं। लेकिन दूसरी और एक वक्त की रोटी के लिए मुहताज सामान्य वर्ग की ओर अनदेखा करते दिखाई देते हैं।

''सिंह सेनापति' में लेखक ने नायक सिंह नवविवाहिता पत्नी रोहिणी को लेकर तक्षशिला से वैशाली लौटता हैं उस समय सिंह रोहिणी को सम्राट के राज्य में स्थित समाज में वैषम्यता के बारे में सुनाता है, 'यह राजा का राज्य है, इसलिए मनुष्यों के व्यवहार में कृत्रिमता जादा है– छोटे–बडे ख्याल अधिक है। लोग गणों की अपेक्षा ज्यादा गरीब है; और बहुत–से दास भी देखे जाते है।''[2]

'दिवोदास' में सामाजिक वैषम्य का चित्रण हुआ है। आर्य जन असुरों से विकसित थे। आर्यों ने व्यापार को महत्व दिया था। इसके परिणामस्वरूप वे विकसित होते चले गए। इसे विपरित असुरजन परंपरागत कामों से जुड़े रहने के कारण उनका विकास आर्य जन की तुलना में बहुत कम हुआ परिणामत: समाज में

वैषम्य को बात उठो। रहन—सहन की विषमता को स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है, "मेरा शरीर छोटा है, मुंह भी उसी के अनुकूल है। यदि रंग में अंतर न होता तो मुझे लोग किलात कहने लगते। दाढ़ी रखने से चेहरा भी भरा मालूम होता है।"[३] यहाँ लेखक ने आर्य जन और किरातों में स्थित वर्णव्यवस्था की वजह से समाज में फैली विषमता का वर्णन किया है। क्योंकि प्राचीन भारतीय समाज में इसी के आधार पर ऊँच—नीचता का भेदभाव किया जाता था इस समस्या की ओर लेखक ने ध्यान आकर्षित किया है। आर्यजन अपने आप को निषादों और किरातों से अलग होने के कारण इंद्र मानते है वे इंद्र की पूजा करते हैं। आर्य निषादो और किलातों को निम्न समजते हैं। उपन्यास के एक प्रसंग भारद्वाज ऋषि अपने आर्य शिष्यों को संबोधित करते हुए कहते है, "आर्य सप्तसिंधु में पश्चिम की ओर से फैलते आए। देखते नहीं निषाद और किलात सबसे निम्न श्रेणी के मनुष्य हैं। उन्हें मनु की संतान न होने के कारण मनुष्य कहना भी नहीं चाहिए। ये दोनों जातियाँ जंगलों या पहाड़ों में रहती है। शिकार उनकी जीविका का प्रधान साधन है। अब भी उन्हें पाषाण अस्त्रों का ही अधिक सहारा है।"[४] यहाँ लेखक ने आर्यो, निषादों तथा किरातों में स्थित जाति—पाँति तथा ऊँच—नीचता की ओर संकेत किया है। यहाँ आर्यो की जाति—पाति की भावना का परिचय प्राप्त होता है जो निषादों और किरातों को अपने से निम्न समझते हैं। लेखक ने यहाँ इस समस्या पर प्रकाश डाला है। इससे समाज में विषमता की बात स्पष्ट होती है।

'मधुर स्वप्न' में ईरान के इतिहास पर प्रकाश डाला है। उपन्यास में उन्होंने भूख से तड़पती ईरानी जनता के इतिहास पर प्रकाश डाला है। उपन्यास में उन्होंने एक ओर भूख से तड़पती ईराणी जनता का चित्रण किया है, तो दूसरी ओर वंश परंपरा से चलते आ रहे शासक और अमीर दरबारियों का चित्रण किया है। जो भूख से तड़प रही जनता की ओर जरासी ध्यान नहीं देते। जिसके कारण समाज में विषमता और बढ़ जाती है। परिणामत: ईरान की भूख से पीड़ित सामान्य जनता आग के दरवाजों को भेदकर राजा के दरबार तक आ पहुँचती है इसका चित्रण उपन्यास के एक प्रसंग में दृष्टव्य है, "अपादान इस वक्त आदमियों से भरा है। द्वार से घुसते ही पहले अजातान् की पंक्ति बैठी दिखलाई पड़ती। यहाँ प्रजा के सबसे निम्न श्रेणी कद्हक—स्वातायान् (ग्राम—प्रभुओं), अस्पारान आदि का स्थान है। ये बगान्—बग् (देवातिदेव) के दर्शन से कृतकृत्य होने के लिए यहाँ बैठे प्रतीक्षा कर रहे हैं। अपने गाँव, अपने स्थान में ये स्वयं वग् (भगवान) से कम नहीं होगे किंतु यहाँ न जाने कितने धक्के खाकर कितनों से दया की भीख मांगकर पहुँचे है। वैसे भी यहाँ साँस लेने की हिम्मत नहीं कर सकते। किंतु उन्हें अभी खूर्रमबाश की आवाज सुनाई दी है जिह्वा! चुप रह क्योंकि आज तू शाहंशाह के सम्मुख है। और आगे बढ़ने पर बांयी ओर सोने के सिंहासन पांती से लगे हुए हैं। यहाँ राजवंशिक कुमार, कुशान, शकान और किर्मान के शाह बैठे हुए हैं। उनमें नीचे विस्पोहवों के सात कुल कारेन—पहल्लव, अस्पाह—पत, गश्नस्प—पहल्लव, स्पन्दियार मेहरान और जिक अपनी बहुमूल्य चकाचौंध करने वाली पोशाक में बैठे है।"[५] यहाँ लेखक ने राजा एवं अमीर अमीर दरबारियों के अपनी प्रजा की प्रति उदासीनता का यथार्थ चित्रण किया है। भूख से पीड़ित ईरान की जनता आखीर अपनी जान की पर्वा न कर राजमहल में घुसने से भी नहीं डरती है। इससे समाज में विषमता की बात स्पष्ट हैं एक ओर गरीबी और भूख से ईरान की जनता तड़प रही थी तो दूसरी ओर धर्म गुरुमगोपतात—मगोपत ऐशो—अराम की जिंदगी जी रहे थे। धर्म गुरु की ऐसो—आराम की जिंदगी पर प्रकाश डाला है। राज्य की जनता को भूखी तड़पती देखकर भी अमीर और दरबारी लोग अन्नागार खुले नहीं करते थे। "हाँ, पुराने दख्मों के गवाक्षों में अब मुर्दों के बैठने की जगह नहीं रह गई है। इतने मुर्दे बढ़ गए है कि चील—कौवों को उनके खाने की फुर्सत नहीं! ये लाखों जन भूखों मरे और उधर बिस्पोह्वों, राजकुमारों और महासेठों की बखारें अब भी अन्न से भरी हुई है।"[६] यहाँ लेखक ने अन्याय एवं अत्याचार से पीसती गरीब जनता की दयनीय अवस्था का चित्र उद्घाटित किया है। जो वर्तमान समाज में उपयोगी सिद्ध होगा।

'जय यौधेय' में राहुल ने साम्यवादी विचारधारा का प्रचार एवं प्रसार किया है। एक ओर साम्राज्यवादी

राजाओं के राज्य में स्थित समाज में विषमता को उद्घाटित किया है, जो दूसरी ओर मुनाफाखोर धन व्यवस्थाओं के माध्यम से साम्यवादी विचारधारा का प्रचार–प्रसार किया है। गण जनों का कहना है कि एक जगह धन का जमा होना बुराइयों की सबसे बड़ी जड़ है। धन का एक जगह होने से उन पर सिर्फ एक का आधिपत्य स्थापित हो जाता है। इसे परिणामस्वरूप समाज में विषमता बढ़ जाती है राहुल समाज में विषमता फैलाने के लिए ब्राह्मणो और राजा को जिम्मेदार ठेहराते हुए लिखा है, "यही ब्राह्मण का जादू है। यह राजा के साथ मिलकर बहुजन की कमाई को लूटने के सिवा और कुछ नहीं हैं। यद्यपि आज भी कितने राजा अपने को बुद्ध का भक्त कहते है, लेकिन उनमें ब्राह्मण भक्त ही ज्यादा है।"[5] यहाँ लेखक समाज में विषमता फैलाने का सबसे बड़ा कारण राजा और ब्राह्मणों को मानते हैं। उनके ऐसे कार्य का पर्दाफाश भी किया है। राहुल के उपन्यासों के समान कहानियों में भी समाज की विषमता का चित्रण हुआ है। उनके 'वोल्गा से गंगा' और 'कनैला की कथा' ये दोनों ऐतिहासिक कहानी संग्रह है। 'पुरुधान' व्यापार को महत्व देने वाले आर्य और अपने परंपरागत व्यवसाय से जिंदगी गुजारने वाले असूर जनों की विषमता की बात प्रस्तुत करते है, "पीले बालों, नीली आँखों वाले आर्य घुड़सवार कभी अपने को असूर नागरिकों से नीच मानने के लिए तैयार न थे। धीरे–धीरे जब आर्यो में से पुरुधान जैसे कितने ही आदमी असूरों की भाषा समझने लगे, और उन्हें उनके समाज में घूमने का मौका मिला तो पता लगा कि असूर आर्यों को पशु–मानव मानते हैं। यह आरम्भ था दोनों जातियों में वैमनस्य के फूट निकलने का।"[6] यहाँ लेखक ने आर्यो तथा असूर जाति में स्थित वर्णनव्यवस्था की ओर संकेत किया है। दोनों ही जातियाँ अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानती है। 'प्रवाहण' कहानी में ब्राह्मणों और दासों में वैषम्य दिखाया है। कुरुराज नायक प्रवाहण की पत्नी लोपा को तीन दासों की भेंट रूप में देता है और उन्हें बेचने की सलाह देता है। तब लोपा इसका विरोध करती है, "अफसोस! हम ब्राह्मण हैं, हम दूसरों से ज्यादा पठित और ज्ञान भी होते हैं, क्योंकि हमें उसके लिए सुभीता है। किंतु जब मैं इन दासों के जीवन का दृश्य है, ना मुझे ब्रह्मा, इंद्र, वरुण सारे अपने देवताओं, वशिष्ठ, भरद्वाज, भृगु, अंगिरा सारे ऋषियों और अपने पिता जैसे आज के सारे श्रोत्रिय ब्राह्मण महाशालों (महाधनिओं) से घृणा हो जाती है।" यहाँ लेखक ने ब्राह्मणों की ऊँच–नीचता की वृत्ति से पीड़ित गरीब जनता की ओर निर्देश किया है। जिसमें ब्राह्मणों के इस अमानवीय कृत्य का पर्दाफाश कर दिया है। लेखक ने अंग्रेज कंपनी के राज्य मे जमींदारों के दुर्व्यवहार से पीड़ित सामान्य जनता और जमींदारें के बीच के वैषम्य को 'रेखा भगत' कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस कहानी के प्रसंग को राहुल ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है, "सब उलटा है मौलू! पहिले प्रजा के ऊपर एक राजा था। किसान बस एक राजा को जानता था। वह दूर अपनी राजधानी में रहता था, उसे सिर्फ दशांश से मतलब था, सो भी जब फसल हुई तब किंतु अब फसल चाहे हो न हो, जमींदार को अपना हाड़–चाम–बेचकर बेटी–बहिन बेचकर मालगुजारी चुकानी होगी।[9] यहाँ लेखक ने अंग्रेजों की कृपा दृष्टि से जमींदार बने अमीर लोगों द्वारा गरीब किसानों पर किए जाने वाले अन्याय का चित्रण किया है। इसमें जमींदार वर्ग किस प्रकार अपनी स्वार्थ की रोटी सेंकते हैं इस पर प्रकाश डाला है।

'सतमी के बच्चे' की अधिकाशं कहानियों में विषमता दिखाई देती है। 'सतमी के बच्चे' इस कहानी का प्रमुख पात्र सतमी अहीरिन घोर निर्धनता में दिन काटने वाली नारी है। इस कहानी में एक जगह पर दशहरे का मेला देखने जाने की बात को लेकर राहुल ने समाज में वैषम्य की बात छेड़ी है, "दशहरे का मेला देखने के लिए जब पन्दहा के गरीब से गरीब लड़के भी दो चार गोरखपुरी (पैसे) पा जाते, और नये या धुले कुर्ते और धोती पहन मेला जाते, उस समय भी सतमी के बच्चों को एक कौड़ी का ठिकाना न होता था।[10] यहाँ लेखक ने गरीबी से पीड़ित सतमी की दैनिय अवस्था का चित्रण किया है। लेखक यहाँ समाज में फैली आर्थिक विषमता का चित्रण किया है। 'घुरबिन' में शेखपुर के जमींदार जगलाल पांडे और शेखपुर की सामान्य जनता में वैषम्य को प्रस्तुत किया है। जमींदार

पाडे को नीचा दिखाने के लिए बैलो की चोरी करने की घटना हुई।" उन्ही को तो दिखाना चाहते है कि सुरबिन क्या कर सकता है। मै और सोमारू दोनों जन उनके पास खड़े होते है और तुम लोग बैलों को निकाल ले जाओ।[११] यहां लेखक जमींदार और गरीबों में स्थित विषमता की ओर संकेत करते है। उसका ही दूसरा रूप आज संसार मे शोषक और शोषित के रूप मे प्रयुक्त है।

'त्रिवेणी' कहानी में निषाद जन और किरात जन में वैषम्य का चित्रण प्रस्तुत किया है। अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए दोनों जन एक–दूसरे पर हमला बोल देते हैं। निषाद और किरातों के रहन–सहन, युद्धनीति में अंतर है। 'काशीग्राम' कहानी में दमिल जाति और निषाद जाति के साथ आर्य जाति के आगमन का चित्र लेखक ने खींचा है। जो इन दोनों जाति से अलग और विकसित है। वे व्यापार को महत्व देते हैं। इसमें तीनों जातियों में विषमता की बात दिखाते हुए आर्य जाति दमिल जाति और निषाद जाति के साथ आर्य जाति के आगमन का चित्र लेखक ने खींचा है। जो इन दोनों जाति से अलग और विकसित है। वे व्यापार को महत्व देते हैं। इसमें तीनों जातियों में विषमता की बात दिखाते हुए आर्य जाति दमिल और निषाद से अलग होने का स्पष्टीकरण दिया है। 'बड़ी रानी' कहानी में शिंशपा नगरी समाज में वैषम्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया है, "राजन्य, उनके पुरोहित और सगौत्री गोरे है, तथा शिल्पी, कर्मकर और दास काले। दोनों रंगों के बीच वैभव और अभाव की खाई है। पर रंग की यह सीमा उतनी पक्की नहीं है। प्रभु–वर्ग में भी कभी–कभी साँवला रंग दिखलाई पड जाता है और दूसरे वर्ग में श्वेत। दासों में रंगों की और भी अव्यवस्था है।"[१२] यहाँ लेखक ने समाज में स्थित रंग भेद संबंधी विचारों का बड़े जोरों से विरोध किया है। 'सैयदबाबा' कहानी में मुट्ठीभर तुर्को से हारने के लिए समाज में वैषम्यता को जिम्मेदार ठेहराते हुए लिखते है, "और केवल क्षत्रिय ही, क्षत्राणियाँ नहीं, उन्हें अपनी लाज बचाने के लिए केवल आग में जल मरने की शिक्षा दी गई है। क्षमा करें, अपनी जाति व्यवस्था के ऊपर कुछ कड़े शब्द कहने के लिए।[१३] यहाँ लेखक ने भारत पर विदेशी आक्रमण के लिए जातिय... को जिम्मेदार माना है। उनका मानना है कि सम... फैली जाति व्यवस्था के कारण भारत पर अंग्रे... ने राज्य किया है।

'बहुरंगी मधुपुरी' की कहानियाँ लेखक... अपने जीवन अनुभव का परिणाम है देश की आ... से पहले और बाद में भी मसूरी से लेखक का ... संबंध रहा है। उन्होंने अपनी आँखों के सामने हो... पर्वतीय प्रदेश की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था... देखा और विभिन्न चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत कि... है। इसमे लेखक ने समाज में विषमता का चि... किया है। भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मसू... (मसुरी) की जनता को अनेक समस्याओं का सा... करना पड़ा इसके दर्शन इन कहानियों के माध्यम... कराएँ है। 'कुमार दुरंजय' का दुरंजय अंग्रेजों से प्रभा... रियासती राजकुमार है।

निष्कर्ष :–

राहुल सांकृत्यायन विवेच्य कथा साहित्य... समाज में फैले वैषम्य को अज्ञान का दूसरा नाम मा... है। वे मानते है कि ईश्वर के नाम के आड में ही ... अनर्थ होते है। समाज में वर्ग वैषम्य, शोषक शोषि... अमीर–गरीब के अस्तित्व को वैद्य घोषित करने... लिए ईश्वर का नाम लिया जाता है।

संदर्भ संकेत:–

१. राहुल सांकृत्यायन, जीने के लिए, पृष्ठ. १३...
२. राहुल सांकृत्यायन, सिंह सेनापति, पृष्ठ. ...
३. राहुल सांकृत्यायन, दिवोदास, पृष्ठ. ३.
४. राहुल सांकृत्यायन, दिवोदास, पृष्ठ. ३८.
५. राहुल सांकृत्यायन, मधुर स्वप्न, पृष्ठ. ६.
६. राहुल सांकृत्यायन, मधुर स्वप्न, पृष्ठ. २०.
७. राहुल सांकृत्यायन, जय यौधेय, पृष्ठ. २३...
८. राहुल सांकृत्यायन, वोल्गा से गंगा, पृष्ठ. ८...
९. वही, पृष्ठ. १३०.
१०. वही, पृष्ठ. ३१२.
११. राहुल सांकृत्यायन, सतमी के बच्चे, पृष्ठ. ...
१२. वही, पृष्ठ. ६६.
१३. वही, पृष्ठ. ३०.